गोवा विश्वविद्यालय शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला हिंदी अध्ययन शाखा

भाषा और साहित्यः सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण*(HIN-528)*

सर्वेक्षण रपट

नाम : रिज़ा शैख

असन क्रमांक : 20

कक्षा : एम. ए भाग १

13/20

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

Scanned with OKEN Scanner

नांवशी गाँव का सर्वेक्षण

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम के अंतर्गत भाषा और साहित्य: सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण यहां विषय है।इस सर्वेक्षण के लिए हमने नांवशी नामक गांव का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण का यह उद्देश्य है कि हमें गांव की संस्कृति, गांव की समस्याएं क्या है, गांव की जनसंख्या कितनी है,गांव में हिंदी कितने लोगो को हिंदी बोलनी आती है, क्या गांव में नेटवर्क की कोई समस्या है, क्या गांव में यातायात की सुविधा है, इन सभी विषयों पर हमें जानकारी प्राप्त करनी थी।

यह सर्वेक्षण करते वक्त मुझे इस बात का पता चला कि जैसे पहले गांव होते थे वहां अब वैसे गांव नहीं रहे। गांव की मान्यताएं जो हमारे दिमाग में पहले थी अब वह पुरी की पूरी बदल गई है।गांव धीरे-धीरे शहरों में तब्दील होने लगे हैं।मुझे उन्हें अब गांव भी केहनहम ठीक नहीं लगता। जब हम गांव पहुंचे तो मैंने देखा कि गांव में पूरी पक्की सड़क थी और लोगों के बहुत बड़े-बड़े घर थे।

आज के जमाने में कोई अपनी बातें अपने जाने वालों और रिश्तेदारों को तक नहीं बताता। हमें तो वहां जाकर उनकी पूरी गांव की जानकारी प्राप्त करनी थी इसलिए थोड़ा डर लग रहा था कि वहां के लोग कैसे होंगे क्या वह हमें हमारे प्रश्नों के उत्तर देंगे भी या हमें उधर से ही जाने का कहेंगे यह सारे प्रश्न हम अपने हृदय के अंदर लेकर चले गए।

जब हम गांव पहुंचे तब एक आदमी से हमारी मुलाकात हुई हमने उन्हें अपना परिचय दिया और उन्होंने हमारे प्रश्नों के उत्तर बहुत सज्जता और सहयोग के साथ दिए। पहले तो बात करने डर लग रहा था पर जैसे-जैसे उनसे बात करते गए थोड़ा मन का डर खत्म हो गया । हमें डर लग रहा था कि क्या कोई हमसे बात करेगा भी या सिर्फ बाहर से ही जाने बोलेगा पर हम जब भी किसी के घर में गए तो उन्होंने हमसे अच्छी तरह से बात की और कुछ लोगों ने हमें अपने घर के अंदर बुलाकर हमें बैठा कर हमारे सवालों के जवाब दिए। और कुछ लोग ऐसे भी थे जो हमें आते देख कर अपना दरवाजा बंद कर देते थे। कुछ लोगों को तो हमसे बात करने में ही डर लग रहा था और उन्होंने कहा कि उन्हें कुछ नहीं पता। पर हमें जितने लोगों से जानकारी मिली हमने उनसे जानकारी प्राप्त कर ली।

हमने गांव में जाकर गांव का समुद्र दिखा और वहां पर बहुत सारे नावें भी देखें जिसके माध्यम से वे लोग अपना मछली पकड़ने का व्यवसाय करते हैं। गांव में अधिक से अधिक लोगों के व्यवसाय नाव लेकर समुद्र में जाकर मछली पकड़ना ही है और उसे

Scanned with OKEN Scanner

बाहर बाजार में जाकर बेच आना है उसे जो कुछ मिलता है उसे वहां अपना पेट भरते हैं। और हम लोगों ने गांव में बालवाड़ी भि देखि जहां सिर्फ चार बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं।

उनकी दी गई जानकारी से हमें गांव की संस्कृति का पता चला वे लोग धालो और जागर अलग तरीके से बनाते हैं और होली भी रात को खेलते हैं। यह भी हमें इस गांव की सर्वेक्षण से पता चला। उनकी कुछ समस्याएं जैसे उनके गांव में कोई दवाखाना नहीं है और बच्चों को विद्यालय में भेजने के लिए बहुत दूर तक जाना पड़ता है। गांव में यातायात की भी कोई सुविधा नहीं है, आदि बातों का हमें पता चला। और सबसे बड़ी परेशानी 'मरीना बे प्रोजेक्ट' पूरे गांव के लोग उसके खिलाफ है।

इस तरह हमने इस सर्वेक्षण कार्य को पूरा किया। सबसे पहले सर्वेक्षण का अर्थ बताते हुए आगे विभिन्न विषयों के अंतर्गत मैंने अपने द्वारा प्राप्त की हुई जानकारी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

Scanned with OKEN Scanner

सर्वेक्षण क्या है ?

सर्वेक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें किसी विषय या विषयों के बारे में जानकारी इकट्ठा की जाती है।यह जानकारी प्राप्त करने के लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे अंकल और प्रश्न पत्र इसका उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाने के लिए सुझाव और नीतियां तैयार करने का होता है, या फिर किसी विषय पर गहरा अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण किया जाता है। सर्वेक्षण कई प्रकार के होते हैं जिनमें से हमहे सामाजिक सर्वेक्षण लेना था। इसलिए हम लोगों ने नांवशी गांव का सर्वेक्षण किया।

सामाजिक सर्वेक्षण:

सामाजिक सर्वेक्षण समाज के विभिन्न पक्षों जैसे सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, राजनीति, व्यावहारिक व्यवस्था और संस्कृत परिप्रेक्ष्य में गहरे अध्ययन का एक प्रकार होता है। इसमें सामाजिक मुद्दों पर ध्यान दिया जाता है जैसे शिक्षा, स्वास्थ और सामाजिक न्याय। सामाजिक सर्वेक्षण समाज के विकास को समझने और उसमें सुधार करने के लिए किया जाता है।

सर्वेक्षण के क्षेत्र का चुनाव करने के पश्चात सर्वेक्षण कार्यक्रम का संचालन आवश्यक है। सर्वेक्षण करने से पहले प्रश्नावली तैयार करना आवश्यक है। इसलिए हमने सही प्रश्नों का चुनाव किया। इस प्रश्नावली का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि जिससे हमारी सर्वेक्षण का उद्देश्य पूरा हो सके यहां प्रश्न निम्नलिखित आधार पर थे।

- घर के सदस्य का नाम।
- घर में कितने लोग रहते हैं।
- उनकी शिक्षा।
- उनका व्यवसाय।
- उनकी आर्थिक स्थिति।
- हिंदी भाषा का ज्ञान।
- गांव की संस्कृति।
- गांव की समस्याएं।

Scanned with OKEN Scanner

नांवशी गांव का परिचय

नांवशी गांव प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्थल है। जहां समुद्र के किनारे पर विस्तृत खूबसूरता है। समुद्र की आन बान और शान को देखकर गांव की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। समुद्र के तट पर स्थित नारियल के पेड़ गांव को और भी खूबसूरत बनती है। गांव का वातावरण शांतिपूर्ण अनुभव प्रदान करता है। गांव की सड़कों पर घूमते हुए मनुष्य को प्रकृति से जुड़ा हुआ और शांतिपूर्णता का अनुभव करवाता है।गांव में दो वाड़े हैं, वहीलो वाड़ो और सकलो वाड़ो। वहीलो वाड़ो ऊंची स्थल पर स्थित है। सकलो वाड़ो गांव के तल से करीब है जो सुंदर दृश्य और प्राकृतिक वातावरण के साथ गांव की सुंदरता को दर्शाता है।

नावशी गांव का इतिहास गोवा के पुर्तगाली शासन की समय से जुड़ा हुआ है पुर्तगालियों ने इस क्षेत्र में अपना शासन स्थापित किया था और इस समय में वहां के लोगों को अपने धर्म और उनके उपनाम में परिवर्तन के लिए दबाव डाला था। कई लोगों को अपना उपनाम बदलने और खुद को इसाई धर्म के अनुयायी बनाने के लिए मजबूर किया गया था। गोवा की स्वतंत्रता के बाद कुछ लोगों ने अपने धर्म को बदला लेकिन उनका उपनाम नहीं बदला। कुछ लोग हिंदू धर्म के होते हुए भी उनका उपनाम परेरा,रोड्रिगिस ही हैं। उनके उपनाम में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।आज हमें इस गांव में हिंदुओं के अलावा और कोई भी धर्म के लोग नहीं देखने मिलते हैं।

नावशी गांव में सातेरी मंदिर और गणपति मंदिर है। सततेरी मंदिर को लगभग 10 साल हो गए हैं जबकि गणपति मंदिर का अभी भी निर्माण चालू है। सततेरी मंदिर अपनी सुंदर वस्तु स्थिति और परंपराओं के साथ गांव के लोगों के लिए पवित्र स्थल है। यहां पर हर वर्ष धालो, जगोर आयोजित किए जाते हैं जो गांव की सभ्यता और एकता को दर्शाते हैं।

इस गांव की खास बात यह है कि यहां के लोग अलग-अलग उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाते हैं। जैसे धालो, जगोर, शिग्मो ऐसे त्यौहार अलग तरीके से मनाए जाते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण त्योहार गांव की संस्कृति को सजीव रखते हैं। यह सब गांव के लोगों के संस्कृति और आदर्शों को दर्शाते हैं और उन्हें एक साथ जोड़ते हैं।

समुद्र के किनारे पर स्थित यह गांव है, यहां के अधिकांश लोग मछली का व्यवसाय करते हैं। यही व्यवसाय उन लोगों के लिए मुख्य आजीविका साधन है। यह व्यवसाय गांव के आर्थिक विकास में भूमिका निभाता है।

Scanned with OKEN Scanner

गांव में समुद्र के साथ-साथ सड़क बिजली और पानी की सुविधा उपलब्ध है लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा में और सुधार की जरूरत है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सर्वेक्षण रपट

हमने नांवशी गांव का सर्वेक्षण किया था । यह सर्वेक्षण करने के लिए हम 11 विद्‍यार्थी अपनी मार्गदर्शक के साथ गए थे। हमने गांव के 15 घरों का सर्वेक्षण किया था। इनमें से हमने जिन दो घरों का सर्वेक्षण किया था वह इस रपट में निम्नलिखित है।

1)लीना फातरपेकर जी का साक्षात्कार

इनके घर में कल तीन सदस्य रहते हैं। लीना फातरपेकर जी 52 वर्ष की है। उनके माता-पिता काम करने जाते थे । पिता नारियल निकालना जाते थे और माता खेतों में काम करने जाती थी।इसलिए इन्हें अपने भाई बहनों को संभालने के लिए घर पर रहना पड़ता था। इस कारण वर्ष उन्होंने कभी पढ़ाई नहीं की।

इनके दो बच्चे हैं एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्री की शादी हो चुकी है। पुत्र जो है वह कलंगुट में दवाखाने में काम करने जाता है। दोनों बच्चों को इन्होंने पढ़ाया लिखाया है। वे स्नातक तक पड़े हैं। खुद ना पढ़ सखी तो अपने बच्चों को तो वह पढ़ना चाहती थी।इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया।लोगों के घरों में जाकर काम करके पाई पाई जोड़कर अपने बच्चों को उन्होंने पढ़ाया। अभी भी वह लोगों के घरों में काम करने के लिए जाती है। सुबह के 9:00 से दोपहर के 12:00 तक भी काम करती है। काम करने के लिए जाते वक्त उन्हें चल कर जाना पड़ता है और आगे बस में उनके सफल होता है। इनके पति आलडिया दी गोवा के बगीचों में काम करते हैं। और वह नारियल का तेल भी बेचते हैं। इनकी शादी को 22 साल हो गए हैं। इनका घर बड़ा है। इनका संयुक्त परिवार था पर अब वह अलग हो चुके हैं वे अब इस घर में अलग-अलग रहते हैं। अब खाना भी अलग ही बनाते हैं कुल मिलाकर उनके घर में 20 सदस्य पहले थे। अभी भी बी है उनके घर में पर वह अलग-अलग रहते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

लीना फातरपेकार जी का घर

Scanned with OKEN Scanner

2)पूजा परेरा जी का साक्षात्कार

उनके घर में कुल चार सदस्य मिलकर रहते हैं। पूजा जी की उम्र 30 वर्ष की है। वे गृहिणी है उन्होंने 12 वीं तक अपनी पढ़ाई मुकम्मल की है। इनके दो बच्चे हैं। एक बेटा और एक बेटी। बेटी जो है वहां पहली कक्षा में है। वह रोसरी स्कूल में जाती है जो दोनपवला में है। और बेटा भी छोटा है उसकी उम्र स्कूल जाने की नहीं है। उनके पति निजी सेवा (प्राइवेट सर्विस) करते हैं। जिस गांव में वह पहले रहती थी इस गांव में उन्हें शादी करके दे दिया था अब वह उसी गांव में रहती है उनकी मां उनसे हमेशा मिलने के लिए आती जाती रहती है। उन्होंने बताया कि उनके गांव में ऐसा कोई रिवाज नहीं है कि गांव के गांव में ही शादी करके देना है पर उनकी प्रेम से शादी हुई थी। और कुछ घरों में गांव के गांव में ही शादी करके दी गई थी।

उन्होंने बताया कि उनकी मां रजनी मुर्गोंवकर जी खेतों में काम करने जाती है और साथी में सब्जियां भी बेचती है। इनके पिता पहले काम करते थे वे बहुत अच्छे इंसान थे सभी का ख्याल रखते थे पर अभी वह शराब पी के आते हैं और लोगों के घरों में जाकर तमाशा करते हैं। हमेशा दूसरों के घरों में जाते रहते हैं और उन्हें परेशान करते हैं। वह उनकी बेटी पूजा परेरा जी के भी घर में आते है और उन्हें बहुत परेशान करते हैं उनसे पैसे मांगते रहते हैं। उनकी मां कैसे-कैसे करके पैसे कमाती है और अपनी गृहस्थी चलती है। पर उनके पती उन्हें बहुत परेशान करते हैं और उनसे पूरे पैसे छीन लेते है और अपनी शराब का बंदोबस्त कर लेते हैं। उनका एक बेटा और बेटी भी है। बेटी काम करने जाती है और बेटा कुछ नहीं करता। जब बेटी काम करने जाती है तभी वहां अपनी मां को खेतों में छोड़ती है। उन्होंने अपने तीनों बच्चों को पढ़ाया लिखाया है।

Scanned with OKEN Scanner

सकलो वाड़ो के घर

वहीलो वाड़ो के घर

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षा

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और सामाजिक विकास को बढ़ाना होता है। यह व्यक्ति को उसके जीवन के लिए तैयार करता है।और उन्हें समाज में योगदान देने के लिए प्रशिक्षित करता है। शिक्षा के दो प्रमुख स्तर होते हैं मूल शिक्षा (प्रायमरी एजुकेशन) और उच्च शिक्षा (हायर एजुकेशन) मूल शिक्षा बच्चों की मूल आवश्यकताओं को पूरा करता है।और उन्हें अध्ययन और समाज में सहयोगी बनता है। उच्च शिक्षा उन्हें चुनौतियों का समाधान करने की क्षमता प्रदान करता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकसित करने, मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने की कोशिश की जाती है। यह समझ में समृद्धि और प्रगति की मूल भूमिका निभाता है।

गांव में एक बालवाड़ी है जहां सिर्फ चार बच्चे ही वहां पढ़ने आते हैं। इस बालवाड़ी की शिक्षिका का नाम मानसी काणकोंकर है। इनके साथ एक हेल्पर भी होती है जो बच्चों को संभालती है। 3 वर्ष के बच्चों का बालवाड़ी में दाखिला किया जाता है। बालवाड़ी में बच्चों का बहुत अच्छे से ध्यान रखा जाता है। उन्हें वहां हर रोज खाना भी दिया जाता है। जो वो लोग बलवाड़ी में ही बनाते हैं। बच्चों का हर 6 महीने में स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है।बच्चों को पोलियो भी दिया जाता है। बच्चों का वजन हर महीने देखा जाता है और उनकी लंबाई का अनुमान 6 महीने में किया जाता है। बच्चों को कीड़ा मारी गोलियां हर 6 महीने में दी जाती है। बलवाड़ी का समय सुबह 8:30 बजे से लेकर दोपहर के 12:30 तक का होता है।गर्भवती महिलाओं को भी बालवाड़ी की ओर से पोषण पारक पदार्थ खाने के लिए हर महीने दिया जाता है।

पहले गांव में एक आंगनबाड़ी भी थी।लेकिन वहां पर बच्चे नहीं आते थे जिसकी वजह से आंगनबाड़ी बंद हो चुकी है इसका मुख्य कारण यह था कि गांव के लोग अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में नहीं भेजते और उन्हें दूसरे विद्यालयों में भेजते हैं।

आजकल के मां-बाप जिन्हें बालवाड़ी में बच्चों के लिए सुविधा उपलब्ध होते हुए भी बच्चों को सरकारी बालवाड़ी में नहीं भेजते हैं वे अपने बच्चों को दूसरे विद्यालय में भेजते हैं जहां उन्हें खुद पैसे देकर बच्चों को भेजना पड़ता है।

Scanned with OKEN Scanner

सर्वेक्षण करते वक्त हमने देखा कि गांव में जो पहली पीढ़ी थी वह पढ़ी-लिखे नहीं थी। और अभी की जो पीढ़ी है वहां पढ़ी लिखी है। इस गांव में शिक्षा का महत्व हमें देखने मिलता है। यहां के बूढ़े लोग जो पहले कभी शिक्षा के प्रति असमर्थ थे अब भी ज्ञान और शिक्षा की दिशा में अग्रसर है उनका यह कदम नहीं उज्जवल भविष्य की ओर एक प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आपके बच्चों की भी शिक्षित होने की इच्छा है। क्योंकि उन्हें यह पता है कि इस समाज में शिक्षा की मांग कितनी है और अगर इंसान शिक्षित होगा तो ही उसे कुछ काम मिलेगा और वहां अपना घर चला सकेगा।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

हिंदी भाषा का ज्ञान

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है और देशभर में एकता और सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। भारत में अलग-अलग क्षेत्र के लोग हिंदी भाषा का ज्ञान करके एक दूसरे से आसानी से संपर्क कर सकते हैं।

गांव में लोगों की मातृभाषा कोंकणी है जो कि उनके रोजमर्रा जीवन की भाषा है। इस वजह से बूढ़े लोगों को हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाई होती है। क्योंकि उनकी मूल भाषा कोंकणी है। इस नतीजे में उन्हें हिंदी समझने और बोलने में परेशानी होती है।

सर्वेक्षण करते वक्त हमें यह देखने मिला कि गांव में भाषा का ज्ञान पीढ़ी के अनुसार अलग-अलग है। बूढ़े लोगों को हिंदी समझना और बोलना मुश्किल होता है, जबकि युवा पीढ़ी को इसमें अच्छी पकड़ है। बूढ़े लोग स्कूल की कमी और जिंदगी भर कोंकणी में बात करने की वजह से हिंदी उन्हें नहीं समझ में आती है। वही युवा पीढ़ी जिन्हें विद्यालय में हिंदी सिखाया जाता है, उन्हें हिंदी में अच्छा ज्ञान होता है और वे इस भाषा को समझने और बोलने में माहिर हैं।

सर्वेक्षण से पता चला कि बूढ़े लोगों में हिंदी भाषा का ज्ञान काम है जबकि युवा पीढ़ी में इसका अधिक इस्तेमाल होता है इसका मुख्य कारण शिक्षा स्थान बूढ़े लोग अधिकतर जमीन पर काम करते हैं और शिक्षा का स्तर कम होता है जबकि युवा पीढ़ी शिक्षा और मॉडर्न तकनीकियों का फायदा उठाती है।

Scanned with OKEN Scanner

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

गांव के समुद्र के तट पर मछली पकढ कर अपना पेट पालने का व्यवसाय एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। इस व्यवसाय में समुद्र के किनारे के लोग सुबह के पहले प्रहर में मछली पकड़ने निकलते हैं और शाम तक बाजार में मछलियां भेज कर अपने घर लौटते हैं। इस व्यवसाय में समस्याओं और समृद्धि का समावेश होता है। जो इस रपट में विस्तार से विचारीत किया गया है।

यहां व्यवसाय गांव के लोगों के पूर्वजों से चला आ रहा है। और अभी यह इनके बच्चे चला रहे हैं। गांव के क्राइसिस नाम के एक व्यक्ति से हमारी मुलाकात हुई थी उन्होंने बताया कि मछली पकड़ने के लिए गांव के लोगों को सुबह के चार- पांच बजे उठकर समुद्र में नाव लेकर जाना पड़ता है और जितनी भी मछलियां मिलती है वह पड़कर लाना होता है। और 8:00 वापस आना पड़ता है। जो नाव मछुआरे इस्तेमाल करते हैं उनकी कीमत तीन-चार लाख होती है। बाद में हमारी मुलाकात जसिंतो कुएलो जिसे हुई वे मछली पकड़ने की दाल अपने हाथों से बनाकर बेचते हैं उन्हें जालो का ऑर्डर भी मिलता रहता है। उन्होंने हमें वह जाल कैसे बनाते हैं वहां भी दिखाया।

आगे हमें पता चला कि इस गांव में पहले बहुत सारे मछलियां मिलती थी पर अब अभी उनकी तादाद बहुत कम हो गई है। कुछ लोगों से हमें पता चला कि करमट, वैल्यो,बांगडे आदि मछलियां इस समुद्र में मिलती है। नरेश कांकोंकर जी ने कहा की ओयस्टर पहले समुद्र में बहुत मिलते थे पर अब वह दिखाई भी नहीं देते।

गांव के लोगों के लिए मछली पकड़ कर व्यवसाय एक मुख्य रोजगार स्रोत है। सुबह के पहले प्रहर में समुद्र के तट पर पहुंचना और मछली पकड़ना उनके रोजमर्रा का काम है। इस व्यवसाय से उन्हें कभी अधिक मुनाफा होता है तो कभी कम परंतु यह उनका मुख्य आधार है।

समुद्र में मछली पकड़ने का काम कठिन होता है। महीने भर के मौसम के परिवर्तन और समुद्र के हालातो का अनुमान लगाना उनके लिए मुख्य है। कभी-कभी मछली पकड़ने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पर गांव के लोगों का जज्बा और मेहनत उन्हें हर मुसीबत का सामना करने में सक्षम बनाता है।

मछलियों को बाजार में बेचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी उन्हें अच्छी कीमत मिलती है। पर कभी भी बचने के लिए मछलियां नहीं मिलती

Scanned with OKEN Scanner

जिसकी वजह से उन्हें नुकसान होता है। इस परेशानी से निपटने के लिए गांव के लोग अपने व्यवसाय में प्रगतिशील और तैयार रहते हैं।

समुद्र के तट पर मछली पकड़ कर अपना पेट पालने का व्यवसाय गांव के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इस व्यवसाय को समृद्ध और स्थाई बनाने के लिए सामुदायिक सहायता और सरकारी प्रेरित योजना की आवश्यकता है।

शगुन काणकोंकर जी और गांव के कुछ लोगों के माध्यम हमें यहां पता चला था कि पहले गांव में बहुत सारे काजू के पेड़ होते थे। पर आल्दिया दी गोवा के आने से उन्होंने गांव के पूरे काजू के पेड़ों को काटकर नष्ट कर दिया पहले गांव के लोग काजू के पेड़ों के माध्यम से शराब बनाते थे और बेचते थे। यह भी इनका एक व्यवसाय ही था पर उन लोगों के आने से सब कुछ बर्बाद हो गया था।

Scanned with OKEN Scanner

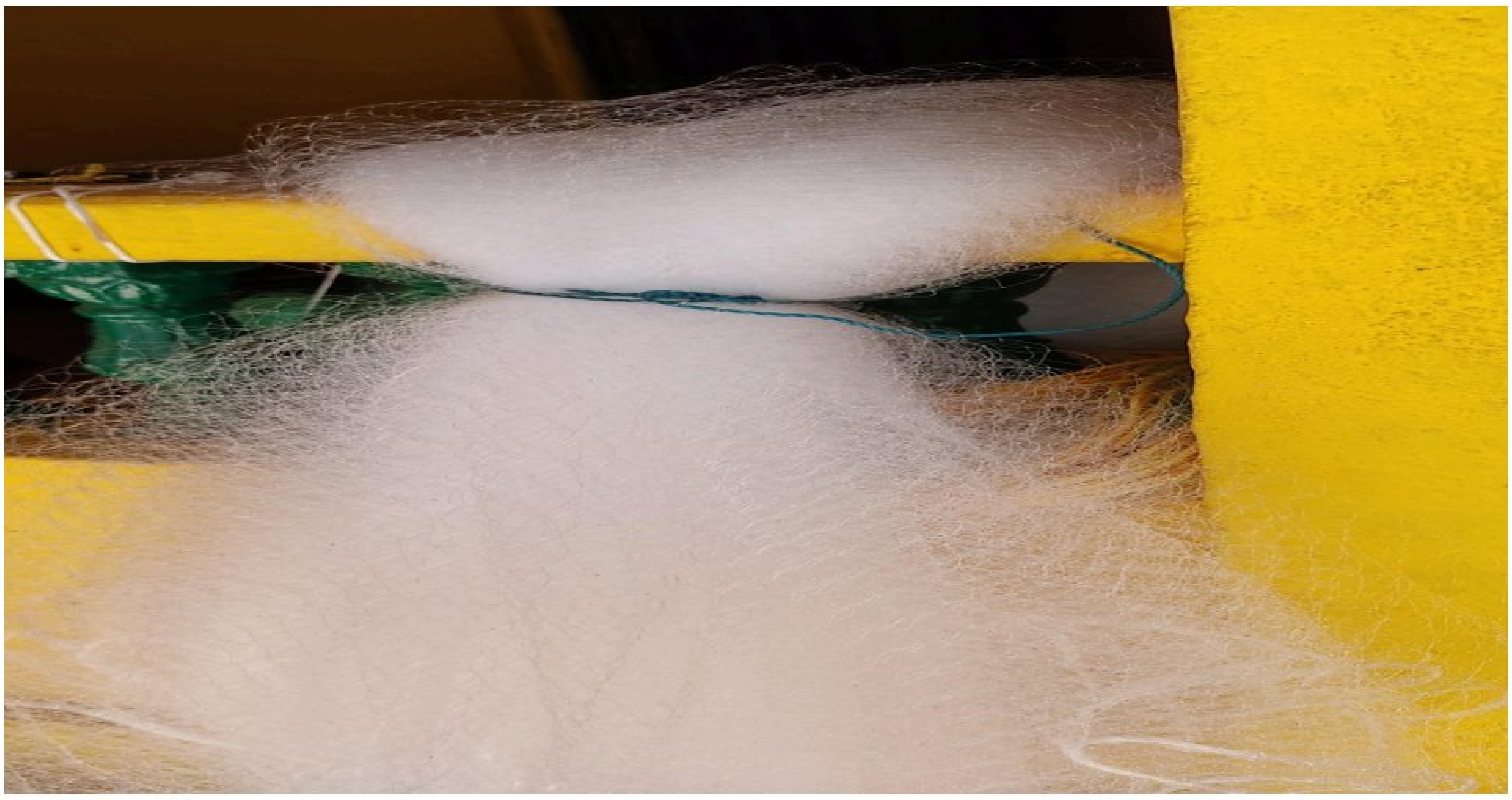

Scanned with OKEN Scanner

सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश

सामाजिक जीवन

इस गांव के लोग सामान्य जीवन बिताते हैं। गांव में पूरे मध्य वर्ग के लोग रहते हैं। गांव में सभी हिंदू धर्म के लोग रहते हैं। गांव दो हिस्सों में बठा हुआ है। आपसी मतभेद के वजह से गांव दो हिस्सों में बठ गया है। पहले गांव एक ही था यहां के लोग एक साथ रहते थे पर अब सब बदल गया है। वहीलो वाड़ो और सकलो वाड़ो दो वाड़ो में गांव बठ गया। पहले सब लोग एक साथ सभी त्योहार मनाते थे पर अब दोनों वादे के लोग अलग-अलग त्योहार मनाते हैं। इसी कारण उन में एकता भी नहीं है।

गांव में सभी पक्के घर दिखाई देते हैं। कुछ बंगले भी गांव में है। कुछ लोगों के घरों के ऊपर टेरेस भी है। गांव में थोड़े घर खपरैल के हैं। घरों के सामने लोगों ने फूलों के पौधे लगाए हैं। लोगों के घरों के सामने तुलसी चाउरा हैं जिसकी वे सुबह उठ के पूजा करते हैं। गांव में हमें अलग-अलग तरह के पेड़ देखने मिलते हैं- जैसे नारियल का पेड़, केले का पेड़, बैगन का आदि।

गांव में बुजुर्ग महिलाएं साड़ियां पहनती है और मध्य आयु की महिलाएं सलवार पहनी नजर आती है तो युवा लड़कियां टी-शर्ट पैंट में नजर आती है। पुरुष लोग शर्ट और पेंट में नजर आते हैं।गांव में कुछ लोग अपने लड़कियों को इसी गांव में विवाह करके देते हैं। यह उनकी कोई परंपरा नहीं है पर कुछ लोगों ने इस गांव में अपनी लड़कियों का इसी गांव में विवाह करके दिया है। इस प्रकार यहा इस गांव का सामाजिक जीवन है।

Scanned with OKEN Scanner

सांस्कृतिक जीवन

गोवा में जो लोग उत्सव मनाए जाते हैं जैसे धालो, जागर, सिग्मो आदि वे परंपरागत है। नांवशी गांव में भी हमें यह लोग उत्सव देखना मिलते हैं।

1.धालो

गोवा में धालो महिलाएं खेलती है। पर इस गांव में धालो महिला द्वारा नहीं खेला जाता। इसे सिर्फ पुरुष ही खेलते हैं। इसका कारण यहां था कि कुछ 60 वर्ष पहले महिलाओं ने धालो खेलने से मना कर दिया इसलिए पुरुषों को आगे बढ़कर खेलना पड़ा। कुल मिलाकर 40 लोग धालो खेलते हैं इनमें छोटे बच्चे भी शामिल होते हैं। रात के 9:30 से इसकी शुरुआत होती है और अगर उन्हें ज्यादा समय तक नाचना होता है तो वे बहुत समय तक नाचती ही रहते हैं। ज्यादा समय तक नहीं चलता 12 से तक खेला जाता है। धालो पांच रात खेलते हैं। इसमें रामायण और कुछ महाभारत की कथाएं गीतों के रूप में गाई जाती है। इसमें रामायण के रावण का रूप बदलकर आना और सीता का हरण करना यहां भी गित के रूप में गया जाता है। हर एक दिन अलग-अलग गीत गाये जाते हैं। धालों के लिए कोई विशिष्ट पहनावा नहीं होता। दूसरे स्थान पर जागर खेलते वक्त महिलाओं के अंदर भार आता है। पर इस गांव में पुरुषों पर भार नहीं आता।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

2.जागर

जाकर भी गोवा के लोग उत्सव के अंतर्गत आता है। जागर इस शब्द से यहां स्पष्ट होता है कि रात भर जागना।जागर में भी रात भर जागा जाता है।इस गांव में जागर रात की 10:30 बजे शुरू होता है और सुबह के 8:00 बजे खत्म हो जाता है। जागर में महिलाओं का आना मना है। केवल 11 वर्ष तक की बच्चियाँ जागर खेलने आ सकती है। जागर इस गांव में अलग तरीके से मनाया जाता है। गोवा के दूसरे स्थान में जागर साल में सिर्फ एक ही बार मनाया जाता है। इस गांव में आपसी मतभेद होने के कारण दो बार जाकर मनाया जाता है। पहले जागर मई महीने के पहले शनिवार को मनाया जाता है जो गांव के नीचे वाले लोग मानते हैं और इसमें गांव के ऊपर वाले लोग नहीं आते हैं। और दूसरा जागर मई महीने के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है इस में ऊपर वाले लोग इसे मानते हैं और नीचे वाले लोग नहीं आते। जागर की तैयारी चार-पांच दिन पहले से ही शुरू हो जाती है। जागर के एक दिन पहले गांव में जो कुरिस उसके पास जाकर गायना गाते हैं। यह पहले से चला आ रहा है इसलिए उन्हें ऐसा करना पड़ता है । के बिना उनका कोई भी कार्य शुरू नहीं किया जाता। यह गायन गाने के लिए वे लोग बंबोली से दो तीन ईसाइयों को बुलाते हैं। जागर की शुरुआत भगवान के नाम से होती है इसे खत्म होने में कुल एक घंटा लगता है। जिसे आदिवन कहते हैं इसका मतलब भगवान के नामो से शुरू किया जाता है। एक बार जागर शुरू हो गया तो वहां से जाने की अनुमति किसी को भी नहीं होती सभी को वहां पर उपस्थित रहना होता है।

जागर में 8 9 चाल गेये जाते है। यह गेते वक्त उन्हें गोल-गोल फिर कर छलांगे लगाकर पूरा नाचना पड़ता है। इसमें भी दलों की तरह रामायण के कथाओ को गया जाता है। जागर खेलने के लिए भी कोई वेशभूषा की आवश्यकता नहीं होती है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

गांव के लोगों की समस्याएं

गांव के लोगों की सबसे बड़ी समस्या है मरीना बे प्रोजेक्ट। मरीना बे प्रोजेक्ट के आने से गांव के लोगों को बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। गांव के लोग इस प्रोजेक्ट के खिलाफ है। प्रोजेक्ट का मानना है कि यह न सिर्फ नावों की परिवहन के लिए सुविधा प्रदान करने के लिए है बल्कि यह अन्य सुविधाएं भी शामिल करेगा जैसे छुट्टी मनाने,सूक्त समय बिताने, रुकने ठहरने, व्यापारिक और सांस्कृतिक मिलनसार और उत्सवों का भी है।

गांव के लोगों का मानना है कि यह जो प्रोजेक्ट है इसके आने से उनका गांव पूरा नष्ट हो जाएगा। सर यह प्रोजेक्ट सफल हुआ तो सभी के घर चले जाएंगे क्योंकि यह प्रोजेक्ट के लिए बड़ी-बड़ी मशीनों की जरूरत है और गांव में रास्ता छोटा होने के कारण गांव के लोगों के घर उनसे छीन लिए जाएंगे इस बात का डर है। अगर उनके घर उनसे छीन लिए जाएंगे तो उनका क्या होगा वह कहां जाएंगे यहां चिंता उन्हें हर वक्त लगी रहती है। अगर उन लोगों ने गांव के लोगों को वहां काम देने का वादा भी कर लिया और लोग काम करने लग भी गए तो उन्हें कुछ ही महीनो में वहां से चल जाएगा यहां कहकर कि उन्हें काम करना नहीं आता इस बात का भी डर होने लगा रहता है। क्योंकि ऐसा उनके साथ पहले भी हो चुका है ग्रैंड हयात जो एक होटल है उन्होंने गांव के लोगों से जमीन खरीदी और गांव के लोगों से वादा किया था कि वह उन्हें काम देंगे और वादे के मुताबिक काम दिया भी पर कुछ ही महीने के अंदर उन्हें वहां से निकाल दिया गया यहां कहकर कि उन्हें काम करना नहीं आता।

उनका कहना है कि के गांव के अधिकतर लोग मछली पकड़ने का व्यापार करते हैं अगर यह प्रोजेक्ट आ गया तो उन्हें इस बात का डर है कि उनकी मछली पकड़ने की परंपरा है उसमें यहां प्रोजेक्ट उन्हें बाधित कर सकता है। वहां जो मछलियां मिलती है वह नहीं मिलेंगे सब कुछ नष्ट हो जाएगा।
मछुआरों को मछली पकड़ने के अलावा और कोई दूसरा काम आता भी नहीं है। यह काम उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी चला रहा है। इसलिए उन्हें और कोई दूसरा काम भी नहीं आता।

Scanned with OKEN Scanner

इस तरह हम देख सकते हैं कि मरीना बे प्रोजेक्ट गांव के लोगों के लिए दुविधा जनक होगा। इस प्रोजेक्ट से उन्हें कोई लाभ नहीं होगा, बल्कि उनका नुकसान ही होगा। इस गांव के पूरे लोग इस प्रोजेक्ट के खिलाफ है।

इस गांव में यातायात की भी सुविधा नहीं है यह भी इस गांव की समस्या है। उन्हें बहुत दूर तक चल कर जाना पड़ता है और आगे उन्हें बस मिलती है इस वजह से उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बस भी जल्दी नहीं आती है उन्हें बहुत देर तक बस का इंतजार करना पड़ता है ।और गांव में सब्जी का दुकान भी नहीं है इसलिए उन्हें बंबोली तक जाना पड़ता है सब्जी खरीदने के लिए। हमें दवा खाना भी नहीं है उन्हें 3 किलोमीटर तक जाना पड़ता है दवाई खरीदने के लिए।

सर्वेक्षण के माध्यम से हमने जाना की कैसे गांव के लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उनके सामने सबसे बड़ी परेशानी मरीना बे प्रोजेक्ट ही है गांव के सभी लोग इसके विरुद्ध है। यातायात और अन्य परेशानी उन्हें इसके सामने बहुत छोटी लगती है।

Scanned with OKEN Scanner

गांव के लोगों की अपेक्षाएं

सर्वेक्षण के दौरान गांव वालों की अपेक्षाएं क्या है यहां हमें जन मिला उनकी अपेक्षाएं कुछ इस प्रकार है:

- गांव में एक सब्जी की दुकान उन्हें चाहिए।
- गांव में यातायात की कोई सुविधा न होने के कारण उन्हें यातायात की सुविधा चाहिए।
- मरीना बे प्रोजेक्ट के वे खिलाफ है और वे चाहते हैं कि यह प्रोजेक्ट कभी भी ना हो।

Scanned with OKEN Scanner

निष्कर्ष

इस प्रकार हमने नांवशी गांव का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण के जरिए हम लोगों ने नांवशी गांव के लोगों को जाना। उनकी संस्कृति, गांव की समस्याएं,गांव में लोगों को हिंदी भाषा का कितना ज्ञान है,गांव के लोगों की अपेक्षाएं क्या है, आदि विषयों पर सर्वेक्षण किया। गांव में मछुआरों के मछली पकढने के व्यापार के बारे में जाना। इस व्यापार में इस्तेमाल किए जाने वाले वस्तुओं को नजदीक से देखा। गांव की इतिहास के बारे में जानने का भी हमें मौका मिला। गोवा के लोक उत्सव धालो और जागर को जनने का मौका मिला। इस प्रकार इस सर्वेक्षण के माध्यम से हमें बहुत कुछ नया जन को मिला। जिन चीजों से हम पहले परिचित भी नहीं थे उन्हें जनने मिला जैसे मुझे यहां भी नहीं पता था कि धालों और जागर भी कुछ होता है।पर गांव का सर्वेक्षण करते वक्त मुझे पता चला और यहां जानकर बहुत आनंद प्राप्त हुआ कि कैसे अलग तरीके से यह लोक उत्सव मनाया जाता है।